समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

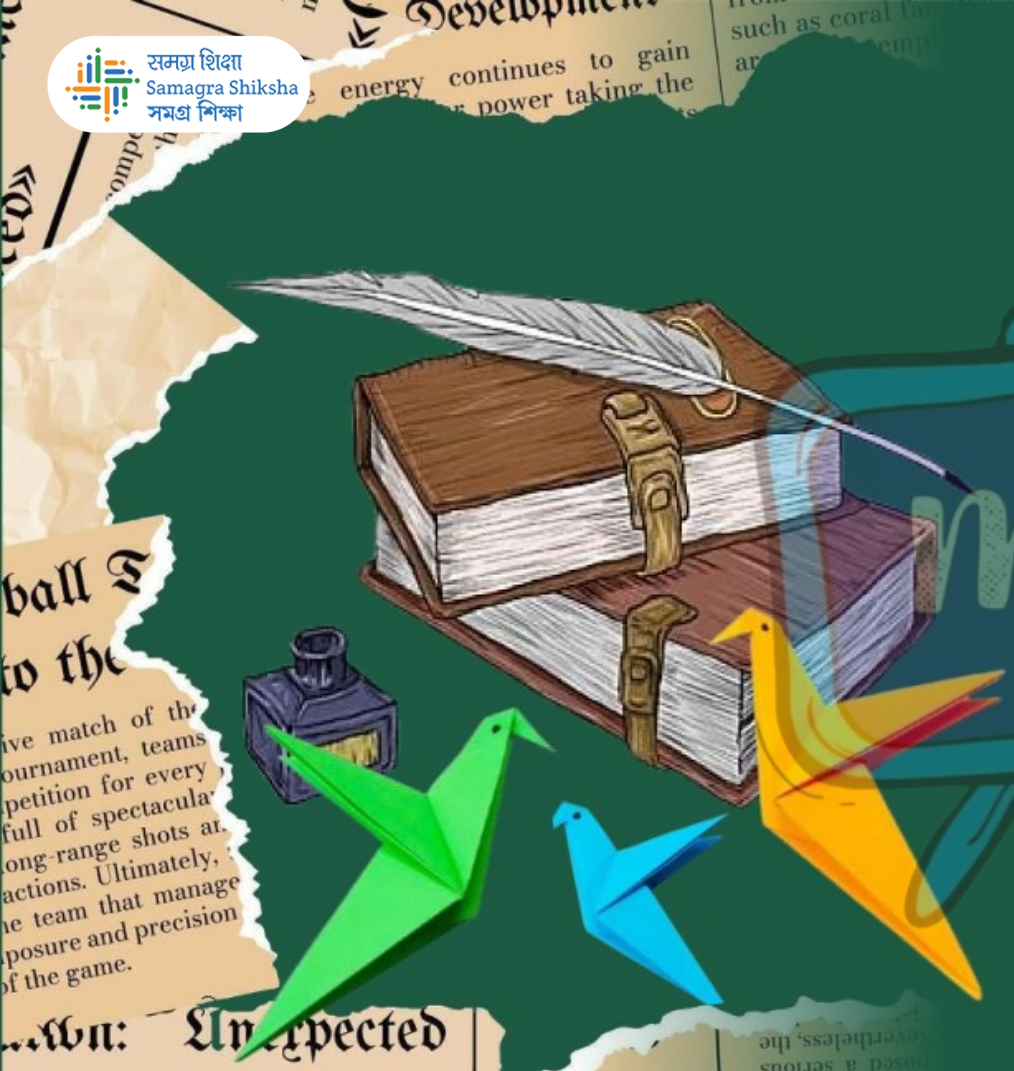

कक्षा - 7

हिंदी (पल्लव)

अध्याय – 11

कागज की कहानी

भाग – 2

मिताली कुमारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

बढ़िया कागज इन्हीं रेशों से तैयार होता है। इन रेशों में पेक्टिन, माँड़ी, चीनी आदि कई प्रकार के रासायनिक तत्व पाए जाते हैं जो कागज को मजबूती प्रदान करते हैं। आवश्यकतानुसार कागज मोटा अथवा बारीक बनाया जाता है। मोटा कागज पेड़ों के रेशों से तथा बारीक कागज रूई के रेशों एवं विशेष प्रकार के घास से तैयार होता है। इन्हें बनाने वाली मशीनें भी अलग-अलग होती हैं। कागज को चमकीला और आकर्षक बनाने के लिए अलग से उसमें कुछ रासायनिक द्रव्य भी मिलाए जाते हैं।



रंगीन कागज बनाने के लिए उसमें विभिन्न रंग भी मिलाए जा सकते हैं।

पहले प्रत्येक कागज अलग-अलग बनाया जाता था। बड़े आकार के एक सौ कागज बनाने में एक कुशल कारीगर को एक घंटा लगता था। जब कागज की माँग बढ़ी तो लोगों का ध्यान कम समय में अधिक कागज बनाने पर गया। फ्रांस और ब्रिटेन के इंजीनियरों ने सरल रूप में कागज बनाने के तरीके ढूँढ़ने में सफलता पाई।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



आज हालत यह है कि मशीनों से बड़ी मात्रा में तथा बेहतर गुणवत्तावाला कागज तैयार हो रहा है। दो हजार वर्ष पहले चीन में हाथ से जितना कागज बनता था, आज उससे दस हजार गुना अधिक कागज बन रहा है।

कारखानों में कागज बनाने के लिए बड़े पैमाने पर पेड़ों की आवश्यकता होती है। इसलिए इस कार्य में लगी बड़ी-बड़ी कंपनियों ने बड़े-बड़े जंगल खरीद लिए हैं। दिन-रात पेड़ काटे जा रहे हैं और उन्हें ट्रकों में भरकर कागज के कारखानों में पहुँचाया जा रहा है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



पेड़ काटना हमारे पर्यावरण के लिए कितना नुकसानदेह है! फिर भी कागज प्राप्त करने के लिए हमें यह नुकसान सहना पड़ता है। परंतु आज वैज्ञानिक इस प्रयास में लगे हुए हैं कि कागज बनाने के लिए कम से कम पेड़-पौधे काटे जाएँ।

105 ई. में चीन में सर्वप्रथम कागज बनाया गया था। वहाँ से यह आविष्कार कोरिया, जापान और अन्य देशों में पहुँचा। चीन से तिब्बत होकर कागज बनाने की कला भारत पहुँची और फिर अरबवासियों ने इसे प्राप्त किया।



इटली में कागज बनाने की कला का विकास हुआ तो वह पूरे यूरोप को कागज भेजने लगा। कलम-पेंसिल के आविष्कार होने और छापेखाने के खुल जाने से कागज के उपयोग में बेतहाशा बढ़ोत्तरी हुई है। संसार के सभी देशों में कागज के कारखाने खुल गए हैं। संयुक्त राज्य अमरीका, कनाडा, फिनलैंड, स्वीडन, रूस आदि देश कागज के उत्पादन में आगे हैं। भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और पंजाब में कागज बनाने के कारखाने हैं। असम में जागीरोड और जोगीघोपा नामक स्थानों पर कागज बनाने के कारखाने हैं।



कामरूप जिले के पानीखाइती नामक स्थान पर हार्डबोर्ड (मोटा कागज) बनाने का एक कारखाना है।

आज कंप्यूटर के बढ़ते प्रयोग से कागज के उपयोग में बहुत कमी आई है। इंटरनेट के इस युग में महत्वपूर्ण जानकारियाँ हमें कंप्यूटर से मिल रही हैं। कई प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ और पुस्तकें हम कंप्यूटर के द्वारा पढ़ रहे हैं। आज सभी विभागों के कार्यालयों एवं बैंकों में कंप्यूटर से ही कार्य हो रहा है।

उन कंप्यूटरों में सभी रिकार्ड संचित रहते हैं। इससे कागज की बचत हुई है और कागज बनाने के लिए पेड़-पौधों की कटाई में भी कमी आई है।

कागज बड़ी ही उपयोगी वस्तु है। पढ़ने के बाद हम कागज को जहाँ-तहाँ फेंक देते हैं- यह गलत बात है। पढ़ने के बाद कागज को दूसरे रूपों में भी प्रयोग किया जा सकता है। हमें याद रखना चाहिए कि कागज कभी रद्दी नहीं होता। पुनरावर्तन के द्वारा उससे कितनी ही चीजें बनाई जा सकती हैं !

मूल्यांकन



1 भारत और ब्रिटेन के इंजीनियरों ने सरल रूप में कागज बनाने के तरीके ढूँढ़ने में सफलता पाई ।

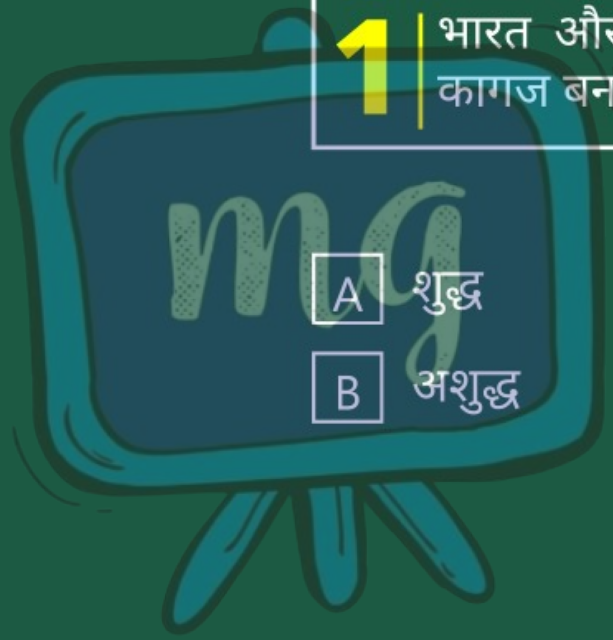

A शुद्ध

B अशुद्ध

मूल्यांकन



2 | भारत में उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल और पंजाब में कागज बनाने के कारखाने हैं।

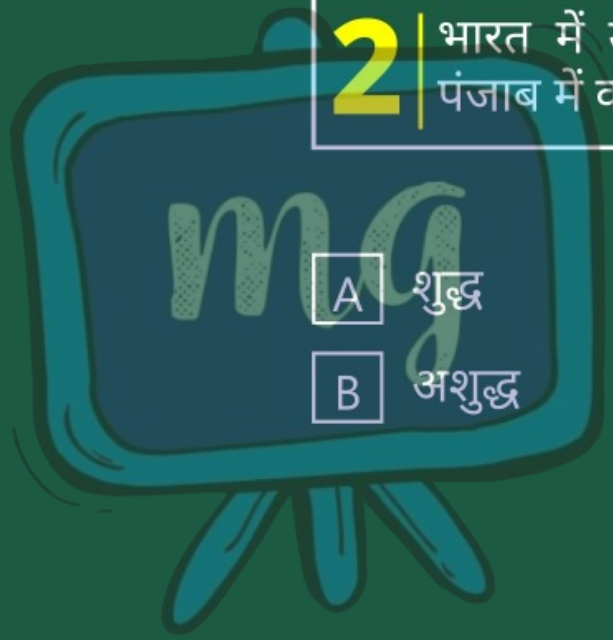

A शुद्ध

B अशुद्ध

मूल्यांकन



3 | 105 ई. में जापान में सर्वप्रथम कागज बनाया गया था। ।

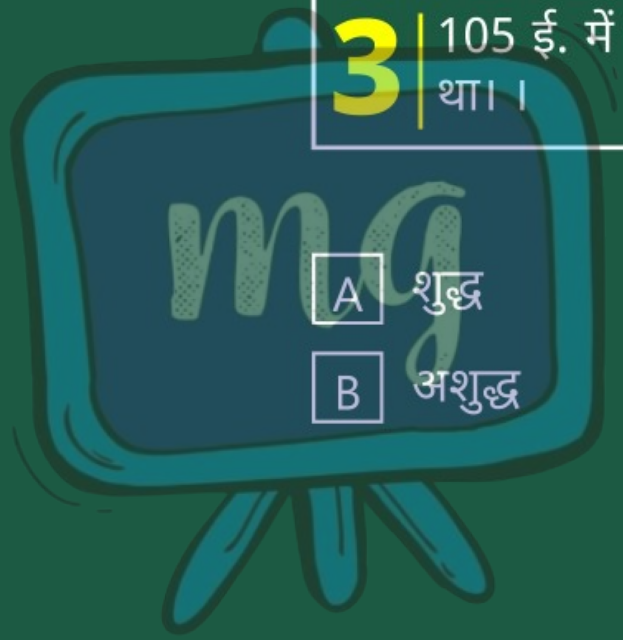

A शुद्ध

B अशुद्ध